अजब तेरा क़ानून देखा

गायन : विजु कुलकर्णी

ध्रुवपद :

ऐ खुदा, मैंने देखा है कि

तेरे क़ानून कैसे अजब, कैसे रहस्यमय हैं!

तेरे तरीक़े कैसे गज़ब के हैं, कैसे अद्‌भुत हैं!

मैंने जहाँ भी दिल लगाया है,

जिसे भी अपना प्रेम दिया है,

वहीं मैंने बार-बार तुझे ही पाया है।

पद १ :

तुझे कोई मन्दिर में नहीं पाता,

न तू मस्जिद में मिलता है।

क्योंकि ऐ खुदा, तुझे तो सिर्फ़,

एक सच्चे और निश्छल साधक के दिल में ही जाना जा सकता है,

उसी दिल में जाना जा सकता है जो ललक के साथ धड़कता हो।

पद २ :

और एक बार यह दिल पूरी तरह तुझ पर फ़िदा हो गया,

और अपने आप को पूरी तरह तेरे हवाले करके,

इसने तेरे सामने समर्पण कर दिया,

तो तू अपने प्रेम का पूरा जलवा दिखा देता है।

पद ३ :

ऐ खुदा,

एक बार जो भी तेरी पाक सीरत यानी तेरे शुद्ध स्वभाव का आशिक़ हो गया,

फिर वह उसी रंग में रँग गया जिसमें तूने उसे रँग दिया।

पद ४ :

जिनके दिल में थोड़ी भी

खुदी यानी किंचित् भी वैयक्तिकता का भाव बाक़ी है,

वे गुमराह हो जाते हैं।

जो अपने अहं का व अपने पृथकत्व के भाव का त्याग कर देते हैं,

केवल वे ही तुझसे मिलेंगे और तेरे हो जाएँगे।

पद ५ :

जिन्हें तुझ पर विश्वास है, ऐ खुदा,

वे तेरे दर्शन ऐसे करते हैं और उसे ऐसे सँजोकर रखते हैं,

जैसे किसी भिखारी के हाथ

कोई बेजोड़ व अनमोल मोती लग गया हो।

अंग्रेज़ी भावार्थ : ईशा सरदेसाई

परिचय : ईशा सरदेसाई

भारत में सदियों से महान कविजन, भगवान के प्रति अपना प्रेम कव्वाली के माध्यम से प्रकट करते आए हैं। कव्वालियाँ, ऐसे भक्ति-गीत हैं जिनका आरम्भ सूफ़ी परम्परा में हुआ। ये कव्वालियाँ हिन्दी, उर्दू, अरबी, पंजाबी या फ़ारसी भाषा में या फिर इन भाषाओं के मिश्रण में गाई जाती हैं और निस्सन्देह, ये प्रेम की सबसे मनमोहक व अन्तर-मस्ती से भर देने वाली अभिव्यक्तियों में से हैं।

कव्वाली, हृदयस्पर्शी होने के साथ-साथ आनन्दपूर्ण भी होती है। इसके सुरों में इतनी सौम्यता, इतनी फ़रियाद भरी तड़प होती है कि वह एकाएक आपके हृदय के तारों को छेड़ देती है। साथ ही, इसका संगीत विस्तृत होने के, स्वतन्त्रता के और असीम विकास के भाव को व्यक्त करता है। कव्वाली में पूरी उन्मुक्तता होती है।

जिन सम्मेलनों या जलसों में परम्परागत तौर पर कव्वलियाँ गाई जाती हैं, उन्हें 'महफ़िल-ए-समा' कहते हैं। 'महफ़िल' का अर्थ है "सम्मेलन या जलसा" और 'समा' एकत्र होने की उस सूफ़ी प्रथा को कहा जाता है जिसमें विशेषकर आध्यात्मिक या धार्मिक संगीत का गायन होता है।

मैंने कव्वाली की महफ़िलों में भाग लेने वालों से सुना है कि ये महफ़िलें लाजवाब होती हैं। जब कव्वाल यानी गायक की आवाज़ वातावरण में लहरा रही होती है, जब तबले या ढोलक की थाप, लोगों की अपनी धड़कन के साथ एकलय हो रही होती है तो वास्तव में प्रेम की, भक्ति की ऊर्जा उस स्थान में तरंगित हो उठती है। लोग अकसर उठकर नाचने लगते हैं। भगवान की अनुभूति तत्काल होती है और उसे स्पष्टतः महसूस भी किया जा सकता है।

श्रीगुरुमाई को कव्वालियाँ गाना और सुनना बहुत प्रिय है क्योंकि ये प्रियतम के प्रति, भगवान के प्रति गहरे से भी गहरे प्रेम की अभिव्यक्ति करती हैं। 'अजब तेरा क़ानून देखा,' इस कव्वाली का चुनाव श्रीगुरुमाई ने किया है और यह उनकी संगीत लाइब्रेरी से ली गई है।

हमें इस कव्वाली के रचयिता का नाम ज्ञात नहीं है। फिर भी, जो शब्द उन्होंने हमें दिए हैं, जो रचना उन्होंने सदियों पहले लिखी, उसमें हमें इसके रचनाकार से एक जुड़ाव-सा महसूस होता है और भगवान के प्रति उनके प्रेम को हम भी महसूस कर सकते हैं।

यह कव्वाली अपनी मूल भाषा—हिन्दी और उर्दू के मिश्रण—में बहुत सुन्दर है, इसलिए गुरुमाई जी ने सोचा कि सभी इसे सुनना पसन्द करेंगे। श्रीगुरुमाई के कहने पर एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ की एक सदस्या, विजु कुलकर्णी [या "विजु ताई", सभी उन्हें इसी नाम से जानते हैं] ने इस कव्वाली को 'राग पटदीप' में नए रूप में स्वरबद्ध किया है ।

श्रीगुरुमाई ने विजु ताई से पूछा कि उन्होंने इसकी संगीत-रचना 'राग पटदीप' में कैसे की। इस पर विजु ताई ने कहा कि जब उन्हें यह सेवा मिली तो उन्होंने आँखें बन्द करके कव्वाली से यह प्रार्थना की, कि वह अपनी इच्छा बताए कि उसे किस राग में गाया जाए।

फिर विजु ताई ने गाना आरम्भ किया और वे गाती रहीं, गाती रहीं। गाते-गाते उन्हें पता चला कि यह राग था : 'राग पटदीप'। यह राग प्रेम और तड़प के भाव जगाता है—वह तड़प जो प्रियतम से बिछड़ने से पैदा होती है; उस वियोग को दूर करने की उत्कट इच्छा से पैदा होती है। विजु ताई ने बताया कि यह राग उन्हें बचपन से ही बहुत प्रिय रहा है। इस राग में स्वरबद्ध गीतों को उत्सुकता से सुनने की उनके पास बहुत प्यारी-प्यारी यादें हैं।

विजु ताई कहती हैं, "इस राग की अनोखी धुन मुझे बहुत प्रिय है। यह मेरे हृदय को मोह लेती है। जब भी मैं इस राग को सुनती या गाती हूँ तो यह मुझे खुशी से भर देता है।"

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।